मैंने ख़ुदावंद को देखा है

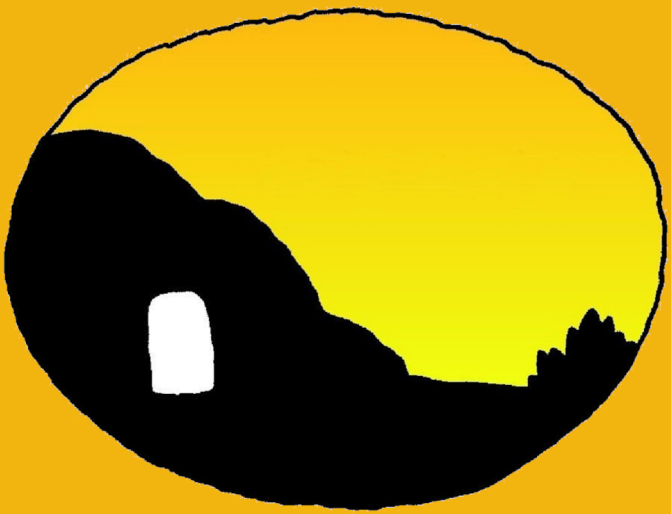

अल-मसीह जी उठता है

maiṅ ne ḳhudāwand ko dekhā hai. al-masih jī uṭhtā hai

I Have Seen the Lord. Al-Masih Rises From the Dead

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 35]

(Urdu—Hindi script)

© 2024 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is derived from J. Kemp/R. Gunther
https://www.freebibleimages.org/illustrations/ls-jesus-alive-1/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

औरतों की मरदानगी	1
ख़ाली क़ब्र	2
यूहन्ना का ईमान	3
मरियम से नरमी	4
आसमानी घर तैयार है	6
तुम्हारी सलामती हो	8
आसमानी घर की खुली दावत	9
तोमा का शक	11
मसीह का तजरिबा करो	12
मसीह की हक़ीक़त जान लो	12
ऐ मेरे ख़ुदावंद! ऐ मेरे ख़ुदा!	12
ईमान क्या है?	14
इंजील, यूहन्ना 20	15

ईसा मसीह ने मरने से पहले फ़रमाया था कि मुझे क़त्ल किया जाएगा, लेकिन तीसरे दिन मैं जी उठूँगा। उसके शागिर्द ऐसी बातें मानने के लिए तैयार नहीं थे। इसलिए जब उसे सचमुच क़त्ल किया गया तो वह सख़्त घबराकर छुप गए। उनके सारे सपने धूल में मिलाए गए थे। अब क्या करें? पहली बात,

औरतों की मरदानगी

जुमे के दिन ईसा मसीह को दफ़नाया गया। हफ़्ते का दिन ख़ामोशी से गुज़र गया, क्योंकि उस दिन काम करना मना था। फिर इतवार का दिन शुरू हुआ। अभी अंधेरा ही था कि कुछ शागिर्द अपने घरों से खिसककर क़ब्र के लिए रवाना हुए।

► **क्या उनमें पतरस और दूसरे बुज़ुर्ग शामिल थे?**
नहीं। सिर्फ़ औरतों में वहाँ जाने की हिम्मत थी। कैसी बात!

► **वह क्यों क़ब्र के पास जाना चाहती थीं?**
वह लाश पर ख़ुशबूदार मसाले लगाना चाहती थीं।

► **लेकिन क़ब्र पर लंबा-चौड़ा पत्थर पड़ा था। वह किस तरह उसे हटा सकती थीं?**

देखो इन औरतों की उम्मीद और जुर्रत। वह तो जानती थीं कि हम पत्थर को हटा नहीं सकतीं। फिर भी वह एक आख़िरी बार अपने उस्ताद और आक़ा की इज़्ज़तो-एहतराम करना चाहती थीं। इसके लिए वह फ़ौजियों और मुख़ालिफ़ों का सामना करने के लिए भी तैयार थीं। पत्थर को किस तरह हटाएँगी? हमको मालूम नहीं। लेकिन हम मजबूर हैं। हमारी गहरी मुहब्बत हमें वह करने के लिए उभार रही है। दूसरी बात,

ख़ाली क़ब्र

इन औरतों में से एक मरियम मग्दलीनी थी। क़ब्र शहर की चारदीवारी से बाहर थी। चलती चलती वह अंधेरे में क़ब्र तक पहुँच गई। लेकिन यह क्या था?! वह घबरा गई। क़ब्र के मुँह पर का पत्थर एक तरफ़ हटाया गया था। यह क्या गड़बड़ थी? मरियम सर पर पाँव रखकर सीधे पतरस और यूहन्ना के पास दौड़ आई। वह चिल्लाई, "वह ख़ुदावंद को क़ब्र से ले गए हैं, और हमें मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।"

► **क्या मरियम ने देखा था कि किसी ने लाश को छीन लिया था?**

नहीं। जब इनसान सख़्त परेशान हो जाता है तो कई बार वह ग़लत नतीजा निकालता है। मरियम ने अंधेरी क़ब्र में झाँका तक नहीं था।

बस एक वहम उसके सर पर सवार हो गया था। शायद उसे पहले से डर था कि कोई लाश को ले जाएगा। तीसरी बात,

यूहन्ना का ईमान

यह सुनते ही पतरस और यूहन्ना एकदम घर से निकले। दोनों दौड़ने लगे, लेकिन यूहन्ना ज़्यादा तेज़ था। वह पहले क़ब्र पर पहुँच गया। उसने झुककर अंदर झाँका तो कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी नज़र आईं। लेकिन वह अंदर न गया। फिर पतरस पहुँचकर क़ब्र में दाख़िल हुआ। उसने भी कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी देखीं। जिस कपड़े में लाश का सर लिपटा हुआ था वह तह करके पट्टियों से अलग पड़ा था। फिर यूहन्ना भी अंदर गया। जब उसने यह देखा तो वह ईमान लाया।

► **देखने पर वह ईमान लाया। इसका क्या मतलब है?**

रस्म के मुताबिक़ पूरी लाश को कपड़े के एक टुकड़े में लपेटा गया था। फिर हाथों को एक पट्टी से जिस्म के साथ जकड़ा गया था जबकि दूसरी पट्टी से पाँवों को बाँधा गया था। बड़े कपड़े के अलावा सर को एक अलग कपड़े से लपेटा गया था। अब कफ़न ज्यों का त्यों वहाँ पड़ा था। मतलब है जब ईसा मसीह जी उठा तो उसका जिस्म आसमानी जिस्म था और उसे कफ़न को उतारने की ज़रूरत नहीं थी। जिस्म कफ़न में से निकल गया और कपड़ा ज्यों का त्यों पड़ा रहा। लेकिन सर का कपड़ा अलग करके रखा गया था।

यही वजह है कि यूहन्ना ईमान लाया। वह समझ गया कि अगर लुटेरे लाश को लूटते तो वह कफ़न पीछे न छोड़ते। मसीह सचमुच जी उठा है। लेकिन पतरस अब तक शक में उलझा रहा।

कलामे-मुक़द्दस ने इसकी पेशगोई की थी।[1] साथ साथ ईसा मसीह ने शागिर्दों को यह बात बार बार बताई थी।[2] फिर भी शागिर्द अब तक यह पेशगोई नहीं समझते थे कि उसे मुरदों में से जी उठना है। अब क्या करें? पतरस और यूहन्ना हैरानी के आलम में घर वापस चले गए। चौथी बात,

मरियम से नरमी

लेकिन मरियम उनके साथ वापस न चली। वह रो रोकर क़ब्र के सामने खड़ी रही। कुछ देर बाद उसने रोते हुए झुककर क़ब्र में झाँका तो क्या देखती है : दो फ़रिश्ते सफ़ेद लिबास पहने हुए वहाँ बैठे हैं जहाँ पहले लाश पड़ी थी—एक उसके सिरहाने और दूसरा उसके पैंताने। उन्होंने मरियम से पूछा, “ऐ ख़ातून, तू क्यों रो रही है?”

सवाल में नरम-सी झिड़की थी। मतलब है तुझे रोने की क्या ज़रूरत है? उसने कहा, “वह मेरे ख़ुदावंद को ले गए हैं, और मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।”

---

1 मसलन ज़बूर 16:8 ओ-माबाद; 22:21 ओ-माबाद; 49:15; 73:24; यसायाह 26:19; 53:10 ओ-माबाद; होसेअ 6:2; 13:14।

2 मत्ती 16:21-23; 17:22-23; 20:17-19

फिर उसने पीछे मुड़कर ईसा मसीह को वहाँ खड़े देखा। लेकिन उसने उसे न पहचाना।

► **उसने उसे क्यों नहीं पहचाना?**

शायद वह अपने आँसुओं के बाइस सही नहीं देख सकती थी। वैसे भी पिछली बार उसने ईसा मसीह को मुरदा हालत में देखा था। वह किस तरह यहाँ खड़ा हो सकता था?

ईसा मसीह ने पूछा, "ऐ ख़ातून, तू क्यों रो रही है, किस को ढूँड रही है?"

हमारे आक़ा का कितना नरम सवाल। उसने उसे सख़्त झिड़की न दी। उसने उसकी आँखों को बड़ी नरमी और सब्र से खोल दिया। वह हमारा अच्छा चरवाहा है। वह हमें प्यार करता है। वह हमें ईमान लाने पर मजबूर नहीं करता। वह हमें बड़ी नरमी से सही इल्म और आज़ादी तक ले जाता है।

यह सोचकर कि वह माली है मरियम ने कहा, "जनाब, अगर आप उसे ले गए हैं तो मुझे बता दें कि उसे कहाँ रख दिया है ताकि उसे ले जाऊँ।"

ईसा मसीह ने उससे कहा, "मरियम!"

उसकी आवाज़ से कितना प्यार टपक रहा था! अच्छा चरवाहा बड़े रहम और मुहब्बत से अपनी बदहवास और उलझन में पड़ी हुई भेड़ को सही पटरी पर लाता है—आपको भी और मुझको भी। वह ज़ालिम नहीं है जिसे डंडा पकड़े हमें कुचल डालने का मज़ा आए।

यह सुनकर मरियम उसकी तरफ़ मुड़ी और बोल उठी, "रब्बूनी!" यानी उस्ताद! पाँचवीं बात,

आसमानी घर तैयार है

भेड़ अपने चरवाहे की आवाज़ सुनती है। मरियम का दिल एकदम मु-हब्बत और ख़ुशी से भर गया। पिछले दिनों में दुनिया बेमक़सद और हौलनाक हो गई थी। सर पर काले काले बादल और घुप-अंधेरा छा गया था। लेकिन अब एकदम सूरज तुलू हुआ। परिंदे चहचहाने लगे। दिल ख़ुशी से नाचने लगा।

ईसा मसीह ने कहा, "मेरे साथ चिमटी न रह, क्योंकि अभी मैं ऊपर, बाप के पास नहीं गया। लेकिन भाइयों के पास जा और उन्हें बता, 'मैं अपने बाप और तुम्हारे बाप के पास वापस जा रहा हूँ, अपने ख़ुदा और तुम्हारे ख़ुदा के पास'।"

► **मरियम को क्यों कहा गया कि मेरे साथ चिमटी न रह?**
ईसा मसीह अपने बाप के पास वापस जा रहा था। लेकिन पहले कई-एक ज़रूरी काम बाक़ी रह गए थे। अब चिमटी रहने का वक़्त नहीं था।

► **उसने फ़रमाया कि भाइयों के पास जा। यह भाई कौन थे?**
भाई से मुराद उसके शागिर्द थे।

► **पहले वह उन्हें भाई नहीं पुकारता था। अब क्यों?**

अपनी मौत और जी उठने से उसने गुनाह और मौत पर फ़तह पा ली थी। इस फ़तह की बुनियाद पर इनसान के लिए एक आसमानी घर तैयार हो गया था—ऐसा घर जिसमें हर एक भाई-बहन बराबर है।

► **वह क्यों फ़रमाता है कि मैं अपने बाप और तुम्हारे बाप के पास वापस जा रहा हूँ, अपने ख़ुदा और तुम्हारे ख़ुदा के पास?**

जो आसमानी घर तैयार हुआ था वह ख़ुदा ही का घर था। मतलब है गुनाह और मौत पर फ़तह पाने से ईसा मसीह ने ईमानदार को अपना घरवाला बना दिया था। जो भी ईमान लाए वह इस घराने का भाई या बहन बन जाता है। मसीह पहले से फ़रमा चुका था कि अब से तुम मेरे दोस्त हो (यूहन्ना 15:14-15)। उसकी मौत और जी उठने से यह बात पूरी हुई।

मसीह की बात सुनकर मरियम मग्दलीनी शागिर्दों के पास गई। वह फूली न समाई। वह बोली, "मैंने ख़ुदावंद को देखा है और उसने मुझसे यह बातें कहीं।"

ख़िदमत के शुरू में मसीह ने शागिर्दों को फ़रमाया था कि आओ और ख़ुद देख लो। वह चाहता था कि लोग सोच-समझकर उस पर ईमान लाएँ। वह चाहता था कि ईमान से एक गहरा घरेलू ताल्लुक़ क़ायम हो जाए। अब जी उठने के बाद भी यह सिलसिला जारी रहा। पहले यूहन्ना ख़ाली कफ़न को देखकर ईमान लाया। फिर मरियम ईसा मसीह

को देखकर ईमान लाई। यह ईमान खोखला नहीं था। यह ईमान किसी फ़रज़ी कहानी पर मबनी नहीं था। यह देखने, सुनने, छूने से क़ायम हुआ था। अब शागिर्दों की बारी आई। छटी बात,

तुम्हारी सलामती हो

उस इतवार की शाम को शागिर्द जमा थे। उन्होंने दरवाज़ों पर ताले लगा दिए थे क्योंकि वह सख़्त डरे हुए थे। अचानक ईसा मसीह उनके दरमियान आ खड़ा हुआ।

► **वह किस तरह आ खड़ा हुआ? क्या दरवाज़े पर ताला नहीं लगा था?**

अब उसका आसमानी जिस्म था। जी उठते वक़्त उसे कफ़न को उतारने की ज़रूरत नहीं थी। अब वह जगह और वक़्त का पाबंद नहीं रहा था।

उसने फ़रमाया, "तुम्हारी सलामती हो।"

► **उसने यह क्यों कहा?**

उसकी मौत और जी उठने का मक़सद तो यही था कि इनसान को सलामती हासिल हो। कि उसका ख़ुदा से ताल्लुक़ बहाल हो जाए।

फिर उसने उन्हें अपने हाथों और पहलू को दिखाया।

► **उसने अपने हाथों और पहलू क्यों उनको दिखाया?**

अब तक हाथों में कीलों का निशान था, अब तक पहलू में उस ज़ख़्म का निशान था जिससे ख़ून और पानी बह निकला था।

ईसा मसीह को देखकर वह निहायत ख़ुश हुए।

► **उसे देखकर वह क्यों ख़ुश हुए?**

वह भूत-प्रेत नहीं था। बेशक उसका जिस्म आसमानी था, मगर जिस्म ही था। उसकी आवाज़, उसका अंदाज़—सब कुछ वैसा ही था। जिससे जुदा होने पर वह बड़ी मायूसी और घबराहट में उलझ गए थे वह दुबारा आ गया था। अच्छा चरवाहा वापस आ गया था। सातवीं बात,

आसमानी घर की खुली दावत

ईसा मसीह ने दुबारा कहा, "तुम्हारी सलामती हो! जिस तरह बाप ने मुझे भेजा उसी तरह मैं तुमको भेज रहा हूँ।"

► **ख़ुदा बाप ने अपने फ़रज़ंद को कहाँ भेजा था?**

दुनिया में।

► **उसने उसे क्यों भेजा था?**

ताकि वह लोगों को एक दावत दे। यह कि मैं तुम्हारे लिए एक आसमानी घर तैयार कर रहा हूँ। तौबा करके मुझ पर ईमान लाओ ताकि तुम मेरे घरवाले बन जाओ।

► **यह आसमानी घर किस तरह क़ायम हुआ?**

ईसा मसीह की गुनाह और मौत पर फ़तह से। जो भी तौबा करके उस पर ईमान लाए उसे अपने गुनाहों की माफ़ी मिलती है, और वह उसका घरवाला बन जाता है।

अब ईसा मसीह चाहता है कि शागिर्द दावत देने का यह सिलसिला जारी रखें।

► **वह कौन-सी दावत दें?**

यह कि ईसा मसीह ने आसमानी घर तैयार कर रखा है। इसलिए तौबा करके ईसा मसीह पर ईमान लाओ ताकि तुम भी उसके घर-वाले बन जाओ।

फिर उन पर फूँककर मसीह ने फ़रमाया, "रूहुल-क़ुद्स को पा लो। अगर तुम किसी के गुनाहों को माफ़ करो तो वह माफ़ किए जाएँगे। और अगर तुम उन्हें माफ़ न करो तो वह माफ़ नहीं किए जाएँगे।"

► **फूँकने से ईसा मसीह ने क्या ज़ाहिर किया?**

उसने उस वाक़िये की तरफ़ इशारा किया जो उसके आसमान पर उठा लिया जाने पर हो जाएगा। उस वक़्त रूहुल-क़ुद्स उन पर नाज़िल होगा। और रूहुल-क़ुद्स में मसीह ख़ुद हाज़िर होगा। इसलिए उसने फूँककर यह बात फ़रमाई। यही रूह पाने से शागिर्दों को वह ताक़त मिलेगी कि वह मसीह की दावत दुनिया के कोने कोने सुना सकेंगे।

► **लेकिन इसका क्या मतलब है कि अब से शागिर्दों को माफ़ करने का इख़्तियार हासिल है?**

अब से शागिर्दों की अव्वल ज़िम्मेदारी यह होगी कि वह सबको मसीह का घरवाला बनने की खुली दावत दें। इसी के लिए उनको भेजा जा रहा है।

► **इस दावत की सबसे बड़ी बात क्या है?**
यह कि तुम्हारे गुनाहों को माफ़ किए जाएँगे अगर तुम तौबा करके मसीह पर ईमान लाओ।

► **अगर सुननेवाले यह दावत क़बूल करें तो क्या होगा?**
उनके गुनाहों को माफ़ किया जाएगा।

► **अगर सुननेवाले यह दावत क़बूल न करें तो क्या होगा?**
उनके गुनाहों को माफ़ नहीं किया जाएगा। ईसा मसीह यही बात फ़रमा रहा है : जो यह दावत क़बूल करे उसके गुनाहों को माफ़ किया जाएगा और वह मेरा घरवाला बन जाएगा। वरना नहीं। आठवीं बात,

तोमा का शक

ईसा मसीह के आने पर तोमा मौजूद न था। दूसरे शागिर्दों ने उसे बताया, "हमने ख़ुदावंद को देखा है!" लेकिन तोमा ने कहा, "मुझे यक़ीन नहीं आता। पहले मुझे उसके हाथों में कीलों के निशान नज़र आएँ और मैं उनमें अपनी उँगली डालूँ, पहले मैं अपने हाथ को उसके पहलू के ज़ख़म में डालूँ। फिर ही मुझे यक़ीन आएगा।" नवीं बात,

मसीह का तजरिबा करो

► **क्या तोमा की शकवाली बात ग़लत थी?**

बिलकुल नहीं। उसने अपनी आँखों से देखा था कि ईसा मसीह मरकर दफ़नाया गया था। वह अपनी आँखों से मसीह को देखना, अपने हाथों से उसे छूना चाहता था। यह बुरी बात नहीं है। आज भी ज़रूरी है कि मसीह हमारे दिलों में बसे। कि हम रोज़ाना उसका तजरिबा करें।

क्या आपको ईसा मसीह का तजरिबा हुआ है? दसवीं बात,

मसीह की हक़ीक़त जान लो

तोमा एक बात पर ज़ोर देता है जो ईमान की बुनियाद है : ईसा मसीह और जो कुछ उसने हमारे वास्ते किया है वह एक ठोस हक़ीक़त है। तोमा कहता है, मैं हक़ीक़त को जानना चाहता हूँ। किसी फ़रज़ी बात पर भरोसा करने का क्या फ़ायदा है?

क्या आप हक़ीक़त को जानना चाहते हैं? ग्यारहवीं बात,

ऐ मेरे ख़ुदावंद! ऐ मेरे ख़ुदा!

एक हफ़ता गुज़र गया। शागिर्द दुबारा मकान में जमा थे। इस मरतबा तोमा भी साथ था। दरवाज़ों पर ताले लगे थे। फिर भी ईसा मसीह उनके दरमियान आकर खड़ा हुआ। उसने कहा, “तुम्हारी सलामती हो!” फिर वह तोमा से मुख़ातिब हुआ, “अपनी उँगली को मेरे हाथों और अपने

हाथ को मेरे पहलू के ज़ख़्म में डाल और बेएतक़ाद न हो बल्कि ईमान रख।"

ईसा मसीह तोमा का शक जानता था। फिर भी उसने उसे झिड़की न दी। उसने उसे खुली दावत दी कि आ जा, चेक कर कि मैं सचमुच ईसा मसीह हूँ। ईसा मसीह अंधे शागिर्द नहीं चाहता। वह ऐसे शागिर्द चाहता है जो सोच-समझकर शागिर्द बन जाएँ।

उसे देखकर तोमा ने कहा, "ऐ मेरे ख़ुदावंद! ऐ मेरे ख़ुदा!"

तोमा का शक एकदम काफ़ूर हो गया, और उसने पहचान लिया कि ईसा मसीह कौन है : वह मेरा ख़ुदावंद और मेरा ख़ुदा है।

► **क्या ईसा मसीह ने कहा कि ऐसी बात मत बोल?**

नहीं। न उसने यह कहा न दूसरे शागिर्दों ने।

► **क्यों?**

इसलिए कि ईसा मसीह ख़ुदा का फ़रज़ंद है। वह तसलीस का दूसरा उक़नूम है। लेकिन ध्यान दो : तोमा कहता है कि **मेरे** ख़ुदावंद, **मेरे** ख़ुदा।

► **वह क्यों मेरा ख़ुदावंद, मेरा ख़ुदा है?**

वह **मेरा** चरवाहा है, जिसने अपनी जान **मेरी** ख़ातिर दी। जो पूरे तौर से ख़ुदा भी है और पूरे तौर से इनसान भी उसने अपनी क़ुरबानी से मुझे गुनाह और मौत के चंगुल से छुड़ाया। अगर वह सिर्फ़ ख़ुदा होता तो वह मेरी जगह न मर सकता, और अगर वह सिर्फ़ इनसान

होता, तो मुझे उसकी मौत से कोई मतलब न होता। तोमा एकदम यह समझ गया, और उसका दिल ख़ुशी और एहतराम से भर गया। इस भेड़ ने अपने चरवाहे की आवाज़ सुन ली थी।

ईसा मसीह बोला, "क्या तू इसलिए ईमान लाया है कि तूने मुझे देखा है? मुबारक हैं वह जो मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाते हैं।" आख़िरी बात,

ईमान क्या है?

ईसा मसीह की यह बात हमें दुबारा यह सोचने पर मजबूर करती है कि ईमान क्या है?

► **क्या ईमान एक बैज है जिससे मैं दिखाता हूँ कि मैं किस स्कूल या पार्टी का मेंबर हूँ? या क्या ईमान रखने का मतलब यह है कि मैं ख़ास रसूमात अदा करूँ?**

नहीं। ईमान अच्छे चरवाहे पर भरोसा है। उस चरवाहे पर जिसने अपनी जान क़ुरबान करके मुझे अपना घरवाला बना दिया है।

इस पर ज़ोर देने के लिए यूहन्ना फ़रमाता है कि ईसा मसीह ने मज़ीद बहुत-से ऐसे इलाही निशान दिखाए जो मैंने बयान नहीं किए। लेकिन जितने बयान किए हैं उनका मक़सद यह है कि आप ईमान लाएँ कि ईसा ही मसीह यानी अल्लाह का फ़रज़ंद है और आपको इस ईमान के वसीले से उसके नाम से ज़िंदगी हासिल हो।

► **जो मोजिज़े और इलाही निशान बयान किए गए हैं उनका क्या मक़सद है?**

यह कि सुननेवाला ईमान लाए कि ईसा ही मसीह है, कि वह अल्लाह का फ़रज़ंद है। क्योंकि यही जानने से इनसान को अबदी ज़िंदगी हासिल होती है। यही पूरी इंजील का मक़सद है कि हर इनसान अच्छे चरवाहे की भेड़ और घरवाला बन जाए।

► **क्या आप अच्छे चरवाहे की भेड़ हैं? क्या आप उसके घरवाले बन गए हैं?**

इंजील, यूहन्ना 20

ख़ाली क़ब्र

हफ़्ते का दिन गुज़र गया तो इतवार को मरियम मग्दलीनी सुबह-सवेरे क़ब्र के पास आई। अभी अंधेरा था। वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि क़ब्र के मुँह पर का पत्थर एक तरफ़ हटाया गया है। मरियम दौड़कर शमाऊन पतरस और ईसा को प्यारे शागिर्द के पास आई। उसने इत्तला दी, “वह ख़ुदावंद को क़ब्र से ले गए हैं, और हमें मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।”

तब पतरस दूसरे शागिर्द समेत क़ब्र की तरफ़ चल पड़ा। दोनों दौड़ रहे थे, लेकिन दूसरा शागिर्द ज़्यादा तेज़रफ़्तार था। वह पहले क़ब्र

पर पहुँच गया। उसने झुककर अंदर झाँका तो कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी नज़र आईं। लेकिन वह अंदर न गया। फिर शमाऊन पतरस उसके पीछे पहुँचकर क़ब्र में दाख़िल हुआ। उसने भी देखा कि कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी हैं और साथ वह कपड़ा भी जिसमें ईसा का सर लिपटा हुआ था। यह कपड़ा तह किया गया था और पट्टियों से अलग पड़ा था। फिर दूसरा शागिर्द जो पहले पहुँच गया था, वह भी दाख़िल हुआ। जब उसने यह देखा तो वह ईमान लाया। (लेकिन अब भी वह कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई नहीं समझते थे कि उसे मुरदों में से जी उठना है।) फिर दोनों शागिर्द घर वापस चले गए।

मरियम मग्दलीनी और मसीह

लेकिन मरियम रो रोकर क़ब्र के सामने खड़ी रही। और रोते हुए उसने झुककर क़ब्र में झाँका तो क्या देखती है कि दो फ़रिश्ते सफ़ेद लिबास पहने हुए वहाँ बैठे हैं जहाँ पहले ईसा की लाश पड़ी थी, एक उसके सिरहाने और दूसरा वहाँ जहाँ पहले उसके पाँव थे। उन्होंने मरियम से पूछा, “ऐ ख़ातून, तू क्यों रो रही है?”
उसने कहा, “वह मेरे ख़ुदावंद को ले गए हैं, और मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।”

फिर उसने पीछे मुड़कर ईसा को वहाँ खड़े देखा, लेकिन उसने उसे न पहचाना। ईसा ने पूछा, "ऐ ख़ातून, तू क्यों रो रही है, किस को ढूँड रही है?"

यह सोचकर कि वह माली है उसने कहा, "जनाब, अगर आप उसे ले गए हैं तो मुझे बता दें कि उसे कहाँ रख दिया है ताकि उसे ले जाऊँ।" ईसा ने उससे कहा, "मरियम!"

वह उसकी तरफ़ मुड़ी और बोल उठी, "रब्बूनी!" (इसका मतलब अरामी ज़बान में उस्ताद है।)

ईसा ने कहा, "मेरे साथ चिमटी न रह, क्योंकि अभी मैं ऊपर, बाप के पास नहीं गया। लेकिन भाइयों के पास जा और उन्हें बता, 'मैं अपने बाप और तुम्हारे बाप के पास वापस जा रहा हूँ, अपने ख़ुदा और तुम्हारे ख़ुदा के पास'।"

चुनाँचे मरियम मग्दलीनी शागिर्दों के पास गई और उन्हें इत्तला दी, "मैंने ख़ुदावंद को देखा है और उसने मुझसे यह बातें कहीं।"

शागिर्द और मसीह

उस इतवार की शाम को शागिर्द जमा थे। उन्होंने दरवाज़ों पर ताले लगा दिए थे क्योंकि वह यहूदियों से डरते थे। अचानक ईसा उनके दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा, "तुम्हारी सलामती हो," और उन्हें अपने हाथों और पहलू को दिखाया। ख़ुदावंद को देखकर

वह निहायत ख़ुश हुए। ईसा ने दुबारा कहा, “तुम्हारी सलामती हो! जिस तरह बाप ने मुझे भेजा उसी तरह मैं तुमको भेज रहा हूँ।” फिर उन पर फूँककर उसने फ़रमाया, “रूहुल-क़ुद्स को पा लो। अगर तुम किसी के गुनाहों को माफ़ करो तो वह माफ़ किए जाएँगे। और अगर तुम उन्हें माफ़ न करो तो वह माफ़ नहीं किए जाएँगे।”

शक्की तोमा और मसीह

बारह शागिर्दों में से तोमा जिसका लक़ब जुड़वाँ था ईसा के आने पर मौजूद न था। चुनाँचे दूसरे शागिर्दों ने उसे बताया, “हमने ख़ुदावंद को देखा है!” लेकिन तोमा ने कहा, “मुझे यक़ीन नहीं आता। पहले मुझे उसके हाथों में कीलों के निशान नज़र आएँ और मैं उनमें अपनी उँगली डालूँ, पहले मैं अपने हाथ को उसके पहलू के ज़ख़्म में डालूँ। फिर ही मुझे यक़ीन आएगा।”

एक हफ़्ता गुज़र गया। शागिर्द दुबारा मकान में जमा थे। इस मरतबा तोमा भी साथ था। अगरचे दरवाज़ों पर ताले लगे थे फिर भी ईसा उनके दरमियान आकर खड़ा हुआ। उसने कहा, “तुम्हारी सलामती हो!” फिर वह तोमा से मुख़ातिब हुआ, “अपनी उँगली को मेरे हाथों और अपने हाथ को मेरे पहलू के ज़ख़्म में डाल और बेएतक़ाद न हो बल्कि ईमान रख।”

तोमा ने जवाब में उससे कहा, “ऐ मेरे ख़ुदावंद! ऐ मेरे ख़ुदा!” फिर ईसा ने उसे बताया, “क्या तू इसलिए ईमान लाया है कि तूने मुझे देखा है? मुबारक हैं वह जो मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाते हैं।”

लिखने का मक़सद : ईमान

ईसा ने अपने शागिर्दों की मौजूदगी में मज़ीद बहुत-से ऐसे इलाही निशान दिखाए जो इस किताब में दर्ज नहीं हैं। लेकिन जितने दर्ज हैं उनका मक़सद यह है कि आप ईमान लाएँ कि ईसा ही मसीह यानी अल्लाह का फ़रज़ंद है और आपको इस ईमान के वसीले से उसके नाम से ज़िंदगी हासिल हो।